मज़हब ही सिखाता है आपस में बैर करना

एक सनातनी हिन्दू धर्म के सिवा

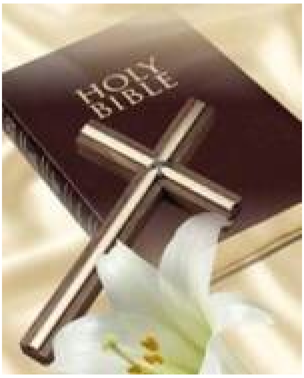

आरेख 1-पवित्र बाइबिल

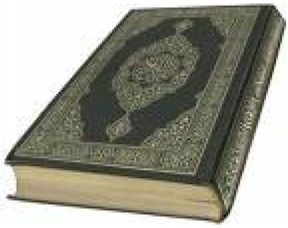

आरेख 2 कुरआन (कुरान)

मानोज रखित

विषयवस्तु

बस केवल एक झलक देख लें 4

ईसाइयों के धर्म की शिक्षायें 4

मुसलमानों के धर्म की शिक्षायें 7

हिन्दुओं के धर्म की शिक्षायें 11

परिशिष्ट 13

संदर्भ सूची 15

धर्म ग्रंथ 15

शब्दकोश (अनुवाद के लिए) 15

अन्य प्रकाशित पुस्तकें एवं प्रकाशित सी-डी 15

चित्र तालिका

आरेख 1-पवित्र बाइबिल 1

आरेख 2 कुरआन (कुरान)..1

प्रार्थना

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु में देव शुभकार्येषु सर्वदा।।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर् देवैस्सदावन्दिता,
सा माम् पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा।।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

समर्पण

कायेन वाचा मनसेन्द्रिऐवा बुध्यात्मना वा प्रकृते स्वभावात।
करोमि यद् यद् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि।।

मानोज रखित
maanojrakhit@gmail.com
http://www.maanojrakhit.com
http://www.scribd.com/maanojrakhit

यदि आप जन-जागरण का संकल्प लेकर इस पुस्तिका को बँटवाना चाहें तो निःसंकोच इसकी प्रतियाँ करवा लें अथवा छपवा लें पर यह ध्यान अवश्य रखें कि कोई परिवर्तन करना आवश्यक जान पड़े तो कृपया मेरी अग्रिम अनुमति लिखित रूप में अवश्य ले लें।

बस केवल एक झलक देख लें

बचपन से मैं सुनता आया था (1) मज़हब नहीं सिखाता है आपस में बैर करना (2) तू न हिंदू बनेगा, न मुसलमान बनेगा, इंसान की औलाद है, इंसान बनेगा (3) ईसाई धर्म प्रेम, दया एवं मानवता की सेवा का धर्म है जीवन के पचास वर्षों तक मैंने इन बातों पर विश्वास भी किया। शिक्षा , मीडिया और प्रचार का प्रभाव मानव की सोच और भावनाओं को इस हद तक प्रभावित कर सकता है। पर अब मैंने स्वयं उन धर्मग्रंथों को पढ़ा। फिर, उन सीखों के आधार पर, उन धर्मों के अनुयायियों ने, मानवता के साथ क्या वीभत्स व्यवहार किया, इसका इतिहास भी पढ़ा।

ईसाइयों के धर्म की शिक्षायें

डिउटेरॉनॉमी 12:1 ये हैं (बाइबिल के) गॉड (ईश्वर) के विधान (कानून) जिनका तुम पालन करोगे तब तक जब तक तुम इस पृथ्वी पर जिओगे 12:2 तुम पूरी तरह विनाश कर दोगे उन सभी स्थानों का जिन पर तुमने अधिकार किया, यदि वहाँ के लोग किसी भी अन्य भगवान की पूजा करते हों, चाहे वे ऊँचे पर्वतों पर बसते हों , या पहाड़ियों पर, या फिर हरी-भरी वादियों में 12:3 और तुम उनके पूजा की वेदियों विध्वंश कर दोगे, उनके पूजा के स्तम्भों को तोड़ दोगे , उनके उपवनों को जला दोगे, उनके देवी-देवताओं के अंकित चित्रों को चीर डालोगे , गढ़ी हुई मूर्तियों को काट डालोगे , उनका नाम तक वहाँ से मिटा डालोगे 13:6 यदि तुम्हारा सगा भा ई जो है तुम्हारी अपनी माँ का बेटा , या तुम्हारा पुत्र, या तुम्हारी पुत्री, या तुम्हारी पत्नी जो तुम्हारे हृदय में बसती हो, या तुम्हारा वह मित्र जो तुम्हारी अपनी आत्मा के समान है - इनमें से यदि कोई तुम्हें चुपके से फुसलाए कि चलो हम चल कर दूसरे धर्म के

भगवान की पूजा करें जो न तुम्हारे भगवान हैं न तुम्हारे पूर्वजों के 13:8 न तुम अपनी सहमति दोगे, न तुम उसकी बात सुनोगे, न तुम्हारी नज़र में उसके प्रति दया होगी, न तुम उसे क्षमा करोगे, न तुम उसे छुपाओगे 13:9 तुम उसे अवश्य ही मार डालोगे, तुम्हारा हाथ वह पहला हाथ होगा जो उसे मृत्यु के द्वार तक पहुँचाएगा , उसके पश्चात दूसरे लोगों के हाथ उस पर पड़ेंगे 13:10 और तुम उसे पत्थरों से मारोगे ताकि वह मर जाए क्योंकि उसने तुम्हें तुम्हारे अपने भगवान से दूर ले जाने की चेष्टा की 20:16 उन शहरों को जिनका तुम्हें तुम्हारे भगवान ने उत्तराधिकारी बनाया, उन शहरों के लोगों में से किसी को भी साँस लेता न छोड़ना 20:17 उन्हें पूर्णतया नष्ट कर देना 32:24 उन्हें भूख से तड़पाओ और जलती हुई आग की लपटों को निगल जाने दो उनके शरीरों को , उनकी मौत अत्यंत दुः खद हो, मैं भी भेजूँगा जानवरों को जिनके दाँत उनके शरीरों पर गड़ेंगे और साँपों को जिनका विष उन्हें धूल चटाएगा 32:25 बिना तलवार के उनके दिलों में आतंक भर दो , नष्ट कर दो जवाँ मर्दों को, कुमारियों को, माँ का दूध पीते नन्हे बच्चों को, और वृद्धों को जिनके बाल पक चुके हों।

ईसाइयाह 13:16 उनकी आँखों के सामने उनके बच्चों को पूरी शक्ति के साथ उठा कर पटको ताकि उनके टुकड़े- टुकड़े हो जायें , और उनकी पत्नियों का बलात्कार करो।

नम्बर्स 31:17 बच्चों में प्रत्येक नर का कत्ल कर डालो और प्रत्येक उस स्त्री का भी जिसने किसी पुरुष के साथ सहवास किया हो 31:18 पर उन सभी मादा बच्चों को जिन्होंने किसी पुरुष के साथ सहवास न किया हो, उन्हें अपने लिए जीवित रखो।

एक्सोडस 23:24 तुम दूसरों के गॉड (ईश्वर) के सामने न तो झुकोगे और न उनकी सेवा करोगे, बल्कि उन्हें पूरी तरह से विध्वंश कर दोगे, उनकी

मूर्तियों तोड़-फ़ोड़ कर नष्ट कर दोगे 34:13 तुम उनकी पूजा की वेदियों ध्वंश कर दोगे , उनकी मूर्तियों को तोड़ दोगे , उनके उपवनों को काट डालोगे 34:14 तुम किसी भी दूसरे भगवान की सेवा न करोगे क्योंकि लॉर्ड, जिसका नाम ईर्ष्यालु है, वह एक ईर्ष्यालु ग़ॉड हैं।

नाहुम 1:2 गॉड ईर्ष्यालु हैं, और लॉर्ड बदला लेते हैं; जब लॉर्ड बदला लेते हैं तो वह क्रोधोन्मत्त हो जाते हैं; लॉर्ड प्रतिशोध लेंगे अपने विरोधियों से; वे अपना क्रोध बरसाते हैं अपने शत्रुओं पर

गॉस्पेल कहते हैं ईसा की जीवनी एवं उनकी शिक्षाओं के संकलन को। सुनिए ईसा की कथनी मैथ्यू की जबानी। संत मैथ्यू ईसा मसीह के बारह मुख्य शिष्यों में से एक थे और उन्होंने ईसा से जो सुना और सीखा उसे गॉस्पेल में लिपिबद्ध किया।

संत ल्यूक बाइबिल में एक गॉस्पेल के लेखक हैं।

मैथ्यू 10:34 न सोचो कि मैं आया हूँ विश्व में शांति लाने के लिए - मैं आया हूँ शांति के लिए नहीं बल्कि तलवार लिए 10:35 क्योंकि मैं आया हूँ आदमी को अपने पिता के विरुद्ध खड़ा करने के लिए - पुत्री को माता के विरुद्ध - बहू को सास के विरुद्ध 10:36 - और मनुष्य का शत्रु होगा उसका अपना परिवार 12:30 वह जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरुद्ध है।

ल्यूक 12:51 तुम समझते हो कि मैं आया हूँ इस धरती को अमन चैन देने? मैं तुम्हें बताता हूँ - नहीं। मैं आया हूँ बँटवारा करने 12:52 क्योंकि अब से घर में पाँच बटे होंगे - तीन दो के विरुद्ध - दो तीन के विरुद्ध 12:53 पिता होगा पुत्र के विरुद्ध - पुत्र होगा पिता के विरुद्ध - माँ होगी पुत्री के विरुद्ध - पुत्री होगी माता के विरुद्ध - सास होगी बहू के ख़िलाफ़ - बहू होगी सास के ख़िलाफ़ 14:26 यदि एक व्यक्ति मेरे पास आता है और वह अपने पिता से घृणा नहीं करता - एवं माता से, पत्नी से, संतानों से,

भाई-बहनों से, एवं अपने-आप से भी - तो वह मेरा शिष्य नहीं बन सकता।

संत थॉमस ईसा मसीह के बारह मुख्य शिष्यों में से एक थे और उन्होंने ईसा से जो सुना और सीखा उसे अपने गॉस्पेल में लिपिबद्ध किया। सुनिए ईसा की कथनी थॉमस की जबानी।

गॉस्पेल ऑफ थॉमस 16 ईसा ने कहा संभवतः लोग सोचते हैं कि मैं आया हूँ विश्व में शांति स्थापना हेतु - वे नहीं जानते कि मैं आया हूँ इस धरती पर फूट डालने के लिए - आग, तलवार और युद्ध फैलाने के लिए - जहाँ पाँच होंगे एक परिवार में - वहाँ तीन होंगे दो के विरुद्ध और दो होंगे तीन के विरुद्ध - पिता होगा पुत्र के विरुद्ध और पुत्र पिता के - और वे डटे रहेंगे क्योंकि वे दोनों अपने आप में अकेले होंगे 56 जो अपने पिता से घृणा नहीं करेगा और अपनी माता से भी, वह मेरा शिष्य नहीं बन सकता। वह जो अपने भाइओं एवं बहनों से घृणा नहीं करेगा , और अपना क्रॉस नहीं ढोएगा जैसा कि मैंने किया है , वह मेरे योग्य न बन पायेगा।

मुसलमानों के धर्म की शिक्षायें

टिप्पणी - कुरआन से प्रस्तुत किए गए उद्धरणों में सूरा 2 अल'बकरा आयत 193 का अर्थ है अध्याय 2 शीर्षक अल'बकरा श्लोक 193

कुर'आन सूरा 2 अल'बकरा आयत 193 तब तक उनसे लड़ते रहो , जब तक मूर्ति पूजा बिल्कुल खत्म न हो जाये और अल्लाह का मज़हब सबपर राज करे आयत 216 लड़ना तुम्हारी मजबूरी है, चाहे तुम कितना भी नापसंद करो इसे।

कुर'आन सूरा 4 अन'निसा आयत 91 वे जो पीठ मोड़ लें , उन्हें पकड़ो जहाँ भी उन्हें पाओ, और उन्हें हिंसा पूर्वक कत्ल कर डालो आयत 56 वे जो अल्लाह के आदेश को नहीं मानते हैं , हम उन्हें आग में झोंक देंगे और जब उनकी चमड़ी पिघल जाए तो हम उनकी जगह नई चमड़ियाँ डाल देंगे ताकि उन्हें स्वाद मिले यंत्रणा का। अल्लाह सबसे अधिक शक्तिमान हैं एवं विवेक पूर्ण हैं।

कुर'आन सूरा 8 अल'अन्फ़ाल आयत 12 जो मेरे अनुयायी नहीं हैं , मैं उनके हृदयों में आतंक भर दूँगा। उनके सर धड़ से अलग कर दो , उनके हाथ और पाँव को इस कदर जखमी कर दो कि वे किसी भी काम के लायक न रह जायें आयत 15 से 18 तक वो तुम नहीं, बल्कि अल्लाह था, जिसने हिंसापूर्ण ढंग से उन्हें मार डाला। वह तुम नहीं थे जिसने उन पर दृढ़ता पूर्वक प्रहार किया। अल्लाह ने उन पर दृढ़ता पूर्वक प्रहार किया ताकि वह तुम जैसे अनुयायी को भरपूर पुरस्कार दे सके आयत 39 तब तक उन पर हमला करते रहो जब तक मूर्ति पूजा का नामों निशाँ न मिट जाये और सब अल्लाह के मज़हब के अधीन न हो जायें। आयत 67 पैगंबर, युद्ध बंदी तब तक न बनायेगा , जब तक वह , उस जमीन पर कत्लेआम न कर ले।

कुर'आन सूरा 9 अत'तौबा आयत 2-3 अल्लाह एवं उनके पैगंबर मुक्त हैं, किसी भी दायित्व से, मूर्ति पूजकों के प्रति... उन्हें ऐसी सजा दो कि वे शोक ग्रस्त हो जायें आयत 5 जब हराम महीने बीत जायें तो मूर्तिपूजकों को कत्ल कर डालो जहाँ भी पाओ उन्हें। छिप कर घात लगाये बैठे रहो उन पर आक्रमण करने के लिए। उन्हें घेर लो और बन्दी बना लो। यदि उन्हें मूर्तिपूजक होने का पछतावा हो और वे इस्लाम कबूल कर लें , नमाज़ पढ़ें, ज़कात (कर) दें तब उनका मार्ग छोड़ दो। अल्लाह ने उन्हें क्षमा किया और उन पर दया की आयत 7 अल्लाह और उनके पैगंबर

मूर्ति पूजकों को विश्वास की दृष्टि से नहीं देखते आयत 39 ऐ मुसलमानों, अगर तुम युद्ध न करो तो अल्लाह तुम्हें कड़ी सजा देगा और तुम्हारी जगह पर दूसरे आदमी को लायेगा आयत 41 चाहे तुम्हारे पास हथियार हों या न हो , चल पड़ो, और लड़ो अल्लाह की खातिर , अपने धन और अपने शरीर के साथ आयत 73 ओ पैगंबर! जो मुझमें विश्वास नहीं करते, उनसे युद्ध छेड़ो। उन पर कठोर बनो। उनका अंतिम ठिकाना नरक है , एक दुर्भाग्य पूर्ण यात्रा का अंतिम चरण आयत 111 अल्लाह ने खरीद लिया है, अल्लाह पर विश्वास करने वालों से (अर्थात मुसलमानों से), उनकी जिन्दगी और उनकी धन- सम्पत्ति क्योंकि (जन्नत) स्वर्ग उनका होगा -वे लड़ेंगे अल्लाह के लिए , हिंसा पूर्वक कत्ल करेंगे अल्लाह के लिए, और कट मरेंगे अल्लाह के लिए। यह वचन है अल्लाह का तोराह में (यहूदियों का धर्मग्रंथ), गॉस्पेल में (ईसा की जीवनी एवं शिक्षायें), एवं कुरआन में, जिससे वह बधें हैं। अल्लाह से बेहतर कौन पूरा करता है अपनी प्रतिज्ञा ? आनन्द मनाओ कि यह जो सौदा तुमने किया है (अल्लाह से) यही तुम्हारी सबसे बड़ी उपलब्धि है आयत 123 मुसलमानों, तुम्हारे आस-पास जो भी गैर-मुसलमान बसते हैं, हमला बोल दो उन पर, उन्हें जताओ कि तुम कितने कठोर हो।

कुर'आन सूरा 22 अल'हज़्ज़ आयत 19-22 आग के परिधान (वस्त्र) बनाये गए हैं उनके लिए जो इस्लाम को नहीं अपनाते। उबलता हुआ पानी उनके सर पर डाला जायेगा ताकि उनकी चमड़ी भी पिघल जाए और वह सब भी पिघल जाए जो उनके पेट में है (अँतड़ियाँ भी)। उन पर कोड़े बरसाये जाएँ, आग में तपते हुए लाल लोहे के बने कोड़ों से।

कुर'आन सूरा 33 अल'अहज़ाब आयत 36 जब अल्लाह एवं उसके पैगंबर ने निर्णय कर लिया है, किसी भी बात पर, तो किसी मुसलमान मर्द या औरत को यह हक नहीं कि वह उस बारे में, कुछ भी कह सके।

कुर'आन सूरा 47 मुहम्मद आयत 4 से 15 तक जब तुम्हारा सामना हो गैर-मुसलमानों से, युद्धभूमि पर, उनके सर काट डालो। जब तुम उन्हें कुचल डालो तो कस कर बाँधो । उनसे धन वसूल करो। उनके हथियार डलवा दो। तुम ऐसा ही करोगे। यदि अल्लाह ने चाहा होता तो वह स्वयं उन्हें नष्ट कर देता, तुम्हारी सहायता के बिना। पर उसने यह आदेश दिया है, ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले सके। और वे जो अल्लाह के लिए लड़ते हुए कट मरेंगे, अल्लाह उनके काम को व्यर्थ न जाने देगा। वह उन्हें जन्नत में बुला लेगा। अल्लाह का वचन है यह। मुसलमानों , यदि तुम अल्लाह की सहायता करते हो, तो अल्लाह तुम्हारी सहायता करेगा, और तुम्हें मज़बूत बनायेगा। पर जो अल्लाह का न होगा वह अनन्त काल तक नरक में सड़ेगा। अल्लाह केवल मुसलमानों की ही रक्षा करेगा। गैर-मुसलमानों का कोई भी रखवाला नहीं। जो सच्चे धर्म (इस्लाम) को अपनायेंगे उन्हें अल्लाह जन्नत में दाखिल करेगा। जो मुसलमान नहीं बनेंगे, वे वही खायेंगे जो जानवर खाते हैं, नर्क उनका घर होगा... वे वहाँ अनन्त काल तक रहेंगे , और खौलता हुआ पानी पिएँगे जो उनकी अँतड़ियों को चीर देगा।

कुर'आन सूरा 48 अल'फ़तह आयत 29 मुहम्मद अल्लाह के पैगंबर हैं। जो उनका अनुसरण करते हैं वे गैर-मुसलमानों के प्रति बेरहम होते हैं पर एक दूसरे (मुसलमानों) के प्रति कृपालु होते हैं।

कुर'आन सूरा 60 अल'मुम्तहना आयत 4 शत्रुता एवं घृणा ही रहेगी हमारे बीच तब तक जब तक तुम केवल अल्लाह के बंदे न बन जाओ।

कुर'आन सूरा 66 अत'तहरीम आयत 9 ओ पैगंबर! जो मुझमें (अल्लाह में) विश्वास नहीं करते, उन पर हमला करो और उनके साथ कठोरता से पेश आओ। नर्क उनका निवास होगा, दुर्भाग्य पूर्ण उनका भाग्य होगा।

कुर'आन सूरा 69 अल'हक्का आयत 30-33 - उसे पकड़ो और उसे बाँधो। जलाओ उसको नर्क की आग में और उसके बाद बाँधो उसे एक जंजीर से, जो हो सत्तर क्युबिट लंबा , क्योंकि उसने अल्लाह को नहीं स्वीकारा , जो हैं सबसे ऊपर।

हिन्दुओं के धर्म की शिक्षायें

भगवद्गीता अध्याय 9 श्लोक 29 मैं सब भूतों में समभाव से व्यापक हूँ, न कोई मेरा अप्रिय है और न प्रिय है ; परन्तु जो भक्त मुझको प्रेमसे भजते हैं, वे मुझमें हैं और मैं भी उनमें प्रत्यक्ष प्रकट हूँ।

ऋग्वेद 1-164-46 ब्रह्माण्डीय सत्य एक है परन्तु प्रज्ञावान उसे भिन्न-भिन्न ढंग से अनुभव करते हैं - जैसे इंद्र, मित्र, वरुण, अग्नि, शक्तिशाली गरुत्मत, यम एवं मतरिस्वन।

शिवमहिम्ना स्तोत्र 3 जिस प्रकार से अनगिनत नदियाँ भिन्न- भिन्न मार्गों से, सीधे या टेढ़े- मेढ़े रास्तों से , बहती हुई अंत में जाकर उसी सागर से मिलती हैं , उसी प्रकार सभी इच्छुक तुम (ईश्वर) तक जा पहुँचते हैं, अपनी-अपनी चेष्टाओं के द्वारा, अपनी-अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार।

तैत्रीय उपनिशद ब्रह्मवल्लि एवं भृगुवल्लि, शांति मंत्र - ईश्वर हम सभी की रक्षा करें। ईश्वर हम सभी का पोषण करें। हम सभी साथ काम करें , एक होकर मानवता की भलाई के लिए। हमारा ज्ञान ज्योतिर्मय हो एवं अर्थपूर्ण हो। हममें एक-दूसरे के प्रति घृणा न हो। चारों तरफ शांति हो , शांति एवं सम्पूर्ण शांति हो।

तैत्रीय अरण्यक चतुर्थ प्रश्न, प्रर्वग्य मंत्र, 42वा अनुवाक - पृथ्वी पर शांति हो, आकाश में शांति हो , स्वर्ग में शांति हो , सभी दिशाओं में शांति हो , अग्नि में शांति हो , वायु में शांति हो , सूर्य में शांति हो , चंद्रमा में शांति

हो, ग्रहों में शांति हो, जल में शांति हो, पौधों में शांति हो, जड़ी-बूटियों में शांति हो, पेड़ों में शांति हो, गाय-बैलों में शांति हो, बकरियों में शांति हो, घोड़ों में शांति हो, मानवों में शांति हो, ब्रह्म में शांति हो, उन व्यक्तियों में शांति हो जिन्होंने ब्रह्म को पाया हो, शांति हो, केवल शांति हो। वह शांति मुझमें हो, केवल शांति! उस शांति के द्वारा अपने-आपमें शांति स्थायी कर सकूँ, और सभी द्विपादों में एवं चतुर्पादों में। ईश्वर करें मुझमें शांति हो , केवल शांति।

सर्वे शाम - सब का भला हो। सब के लिए शांति हो। सभी पूर्णता के योग्य हों एवं सभी उसकी अनुभूति करें जो शुभ हो। सभी आनन्दित हों। सभी स्वस्थ हों। सभी के जीवन में वह हो जो भला है एवं कोई भी कष्ट में न हो।

तैत्रीय उपनिषद शिक्षावल्लि, 10वा अनुवाक - देवी-देवताओं एवं पूर्वजों के प्रति अपने दायित्वों की अवहेलना न करो। तुम्हारी माता तुम्हारे लिए एक देवी स्वरूप हों। तुम्हारे पिता तुम्हारे लिए एक देवता स्वरूप हों। तुम्हारे गुरु तुम्हारे लिए एक देवता स्वरूप हों। तुम्हारे अतिथि तुम्हारे लिए एक देवता स्वरूप हों। जहाँ भी तुम दोष रहित कर्मों को किए जाते हुए देखो, केवल उन्हीं का अनुसरण करो, अन्य कर्मों का नहीं। हम जो तुम्हारे गुरु हैं, जब तुमने देखा है हमें अच्छे कर्म करते हुए तो केवल उन्हीं कर्मों का अनुसरण करो।

बृहद अरण्यक उपनिषद प्रथम अध्याय , तृतीय ब्रह्मणा, 28वा मंत्र हे ईश्वर! कृपया मुझे ले चलो नश्वर से अनश्वर की ओर। ले चलो अज्ञान से ज्ञान की ओर। ले चलो मुझे आवागमन की प्रक्रिया से मुक्त कर मोक्ष की ओर। शांति हो, शांति एवं सम्पूर्ण शांति।

मनु स्मृति 7-90 जब राजा अपने शत्रु से युद्ध भूमि पर लड़े तो वह किसी ऐसे अस्त्र का प्रयोग न करे जो छुपा हुआ हो, कँटीले तारों से बुना

हुआ हो, विष बुझा हो, अथवा जिसके फलक से आग लपलपा रही हो 7-91 राजा उस पर वार न करे जो युद्ध भूमि छोड़ कर भाग रहा हो अथवा डर के मारे पेड़ पर चढ़ गया हो। राजा उस पर वार न करे जो नपुंसक हो, या जिसने विनय पूर्वक दोनों हाथ जोड़ लिए हों, अथवा जो युद्ध भूमि से पलायन कर रहा हो, या जिसने घुटने टेक दिए हों और कहता हो कि मैं तुम्हारी शरण में हूँ 7-92 न उस पर जो सो रहा हो, या जिसके कवच खो गए हों, अथवा जो नग्नावस्था में हो , या फिर जिसने हथियार डाल दिए हों, न उस पर जो युद्ध में भाग न लेता हुआ केवल एक दर्शक मात्र हो, न उस पर जो एक दू सरे शत्रु से युद्ध कर रहा हो 7-93 न उस पर जिसके अस्त्र टूट चुके हों , न उस पर जो शोक में डूबा हुआ हो , न उस पर जो भीषण रूप से घायल हो, न उस पर जो आतंकित हो, न उस पर जो युद्ध क्षेत्र से भाग रहा हो। राजा के ध्यान में रहे एक गौरवपूर्ण योद्धा की आचरण-संहिता।

परिशिष्ट

अनुवादक के रूप में मेरा कर्तव्य बनता है कि मैं अंग्रेज़ी मूल से यथासम्भव हूबहू अनुवाद करूँ ताकि मूल भाव बरकरार रहे।
कोई दो-तीन महिनों पहले मैं बाइबल के एक हिंदी संस्करण की खोज में चर्च के एक प्राधिकृत पुस्तकों की दुकान पर गया। खरीदने के पहले मैंने कुछ हिस्सों का परीक्षण किया। मैंने पाया कि भाषा की चतुराई का प्रयोग कर मूल भावों को एक नया जामा पहना दिया गया था। स्पष्ट था कि यह हिन्दी संस्करण विशेष रूप से उन हिन्दुओं के लिए तैयार किया गया था जिनका धर्म परिवर्तन किया गया होगा। चर्च यह नहीं चाहता होगा कि इन लोगों को आरम्भ में ही सांस्कृतिक आघात मिले। उनके प्रोत्साहन के लिए बड़े (1957 पृष्ठ x 8.5" x 5.5") हिंदी संस्करण का

मूल्य केवल 50 रुपये रखा गया था जबकि उसकी "लगभग एक-चौथाई परिमाण" की छोटी (986 पृष्ठ x 6.5" x 4") अंग्रेज़ी संस्करण के लिए, कोई दो वर्ष पहले इसी मुम्बई में, मैंने 220 रुपये दिये थे (4 गुणा छोटी पुस्तक के लिए 4 गुणा से अधिक मूल्य अर्थात 16 गुणा का फरक)। स्वाभाविक है कि उस यूरोपियन संस्करण को किसी विशेष उद्देश्य से नहीं तैयार किया गया था बल्कि यथावत प्रस्तुत किया गया था।

प्रदर्शन-मंजूषा में रखी हुई, बाइबल के एक बड़े एवं मोटे- से आकर्षक अँग्रेज़ी संस्करण पर मेरी नज़र पड़ी। एक विश्व-विख्यात प्रकाशक कानाम इससे जुड़ा हुआ था , इस पर प्रामाणिकता की मुहर लगाने के लिए। आकर्षक ढंग से लिखा हुआ था कि इस संस्करण का उद्देश्य बाइबल को सहज भाषा में प्रस्तुत करना मात्र था। उसके कुछ नमूनों का मैंने परीक्षण किया। इस संस्करण का निहित उद्देश्य सामने आ गया। भाषा को सहज बनाते समय मूल भावों को बड़ी सहजता के साथ बदल दिया गया था। यह सब खेल आवश्यक होता जा रहा है, क्योंकि अब कुछ लोग इन धर्मग्रंथों का ध्यान से परीक्षण करने लगे हैं, अतः सत्य को उनसे छुपाये रखना क्रमशः आवश्यक प्रतीत होता जा रहा है।

कुरआन के हिंदी अनुवादों में मूल भावों की गम्भीरता को कम करने के लिए दो प्रकार के प्रयोग नजर आ रहे हैं। एक हुई , शब्दों का चयन चतुराई के साथ। दूसरे, कठिन उर्दू शब्दों का अत्यधिक प्रयोग ताकि अर्थ एवं भाव दोनों अस्पष्ट रहें। इस कारण , मैं अँग्रेज़ी में उपलब्ध अनुवादों पर अधिक निर्भरशील हूँ क्योंकि कई लेखकों की सामग्री के परीक्षण के पश्चात मैंने पाया कि वे सभी लगभग एक ही बात कहते हैं , शब्दों के थोड़े हेर-फेर के साथ।

संदर्भ सूची

धर्म ग्रंथ

होली बाइबल, किंग जेम्स वर्ज़न, ब्रॉडमैन ऐंड हॉलमैन पब्लिशर्स, बेलजियम, योरप ISBN 0-8400-3625-4 [1996]

कुरआन मजीद (अरबी-अंग्रेज़ी-हिंदी) मु. मा. पिक्थाल एवं मुहम्मद फ़ारुक खाँ , मक्तबा अल- हसनात ISBN 81-86632-00-X [2003]

कुरआन मजीद , हिंदी अनुवाद हज़रत मौलाना अब्दुल करीम पारेख साहब, एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, लालकुआँ दिल्ली

श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर

शब्दकोश (अनुवाद के लिए)

अंगरेजी-हिन्दी कोश, फ़ादर कामिल बुल्के, काथलिक प्रेस, राँची

ऑक्सफ़ोर्ड अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश ISBN 978-019-564819-5

राजपाल अंग्रेज़ी-हिन्दी शब्दकोश, डॉ हरदेव बाहरी

The New Oxford Dictionary of English ISBN 019-565432-3

New Oxford Dictionary for Writers and Editors ISBN 978-019-861040-3

अन्य प्रकाशित पुस्तकें एवं प्रकाशित सी-डी

ISBN 81-85990-58-1 [1999] edited by Sita Ram Goel, *The Calcutta Qur'an Petition*

ISBN 81-900400-4-9 [2000] Prof G C Asnani, *Selections from Hindu Scriptures - Manu Smriti*

Chants of India, Pundit Ravi Shankar, Angel Records, 2002, Dr Nandakumara, Sanskrit literature, text and meanings

ISBN 81-85990-21-2 [1995] Ishwar Sharan, *The Myth of Saint Thomas and the Mylapore Shiva Temple*

ISBN 81-85990-52-2 [1998] N S Rajaram, *A Hindu View of the World - Essays in the intellectual Kshatriya Tradition*

ISBN 81-900199-8-8 [1998] Arun Shourie, *Eminent Historians: Their Technology, Their Line, Their Fraud*